ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 88 अंक 21
श्रावण शुक्ला नवमी
विक्रम संवत 2071
कलि संवत 5115
5 अगस्त से 21 अगस्त 2014 तक
दयानन्दाब्द 190
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 115

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशनः दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेठ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

वेद ही क्यों?

श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः।

समस्त प्राणी जगत में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणि है। मनुष्य को बुद्धि और ज्ञानार्जन के साधन उपलब्ध है, जिस कारण वह संपूर्ण प्राणीयों पर अपना अधिकार और प्रभुत्व जमा सकता है। इस मनुष्य के जीवन का एक उद्देश्य है। बिना उद्देश्य के जीवन निरर्थक है। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य परमपिता परमात्मा की अनुभूति, प्रचीति एवं साक्षात्कार कर जो आनन्द मनुष्य के पास नहीं है, उसकी प्राप्ति कर मोक्ष सुख की, आनन्द की उपलब्धि करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति का ज्ञान उसे होना नितान्त आवश्यक है, अन्यथा वह उस मार्ग पर चलने में असमर्थ होगा। इस ज्ञान के एवं विज्ञान और प्रज्ञान की पुस्तक वेद है। परमपिता परमात्मा ने ही यह सुंदर व्यवस्था उसके लाडले पुत्रों के लिये कर रखी है।

परमात्मा ने असीम कृपा कर मनुष्य को दो आंखे दी है, परन्तु यदि प्रकाश का स्त्रोत सूर्य न उत्पन्न किया होता, तो आंखो का विषय-रूप-नाकाम हो जाता। परमात्मा ने मनुष्य को नासिका दी है, उसके लिये गंध का भंडार पृथिवी भी दी है। कान दिये है, उनके लिये शब्द का भंडार आकाश भी दिया है। जिव्हा-रसना दी है तो रसों का सागर जल भी प्रदान किया है। इसी तरह इस दयालु और कृपालु ईश्वर ने मनुष्य की बुद्धि के लिये ज्ञान का अथाह महासागर वेद भी दिये है। वही वेद ईश्वर की वाणी कहाता है। वेद अपौरूषेय इस कारण ही है।

संसार में अन्यान्य मतान्तरों में भी ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें विद्यमान है तब वेद की ही महत्ता क्यों है? ईश्वरीय ज्ञान की कुछ कसौटिया है। वे इस प्रकार है-

1. परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की, सृष्टि की रचना की है। उस रचयिता ने कुछ तत्व और नियमों में इसे बांध रखा है। ऋत और सत्य जैसे शाश्वत तत्वों का और सृष्टि में विद्यमान नियमों का ज्ञान केवल वेद द्वारा ही होता है। संसार के ज्ञान विज्ञानादि नियमों से वेद अविरुद्ध है। अन्याय ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकों में यह संभव नहीं है। कारण वे स्वयं सृष्टि के नियमों के विरुद्ध प्रतिपादन कर रहे है, क्या ईश्वर को अपने सृष्टि के तत्व और नियम ज्ञात नहीं है? यदि हैं तो उसके ज्ञान की पुस्तकों में इनके विपरीत बातें क्यों विद्यमान है? इसका सरल अर्थ है कि वे ईश्वरीय पुस्तकें नहीं हो सकती। और ध्यान रखिये कि ईश्वरीय ज्ञान सर्वोपरि है।

2. वेद सब सत्य विद्याओं का आदि स्त्रोत है और भंडार भी है। वेदों में समस्त सत्य विद्याओं का बीज पाया जाता है, यह यथार्थता अन्यान्य तथाकथित ईश्वरीय पुस्तकों में नहीं है। अतः वेद ज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक है। कतिपय उदाहरण- वेदों में परा और अपरा विद्या है। लौकिक एवं पारलौकिक ज्ञान भंडार है। संसार के विज्ञान विषयों का ज्ञान इससे हमें प्राप्त होता है। पृथ्वी दो प्रकार से गतिशील है, संपूर्ण ग्रह नक्षत्रमाला अपनी अपनी परिधि में चलायमान है। सूर्य स्वयं के गिर्द घूम रहा है। सूर्य के आकर्षण से सभी ग्रह नक्षत्र अपना अपना स्थान जमाये है। वेदों में गणित, ज्योतिष, नौकायन, विमानादि विद्या, तार बेतार विद्या, चुंबकीय विद्या, वैद्यक शास्त्र,

उन्नति जीवन का नियम है, अभी तक मनुष्य, मनुष्य नहीं हुआ है।

संगीतादि विद्यायें है। वेदो के शब्दार्थ यौगिक है उनका आध्यात्मिक और यज्ञपरक अर्थ है। संपूर्ण योगविद्या, अध्यात्म सार वेदों से मिलता है। मनोविज्ञान के विषयों का संकलन अथर्ववेद के ६/४/११ में स्पष्ट प्रतीत होता है। गीता का मूलाधार मंत्र यजुर्वेद के ४०/२ अनुसार है। मंत्र है- कुर्वन्नेवेह कर्माणि.... न कर्म लिप्यते नरे। बाइबिल का सार वाक्य प्रेमभाव एवं मित्रता का है। जो यजुर्वेद ३६/१८ अनुसार है- दृते दृंमा मित्रस्य या चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ..... मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। पवित्र कुरान शरीफ का मूलमंत्र-एकेश्वरवाद है- अल्लाह एक है उसका आधार वेदमंत्र ऋग्वेद १/१६४/४३ है। सूर्य के सुषुम्ना नामक किरण से चंद्रमा प्रकाशित होता है। यह यजुर्वेद के १८/४० में कहा गया है। सूर्य की ऊर्जा का स्त्रोत या आधार सोम है, अथर्व १४/१/२ में कहा गया है। सूर्य पर बड़े बड़े खड्डे और काले धब्बे है जिसमें अपनी पृथिवी जैसे ग्रह समा सकते है ऋ १/७९/२। सूर्य चर और अचर की आत्मा है। सूर्य की ऊर्जा का स्त्रोत या आधार सोम है, अथर्व १४/१/२ में कहा है, सोमेन आदित्या बलिनः। उदजन (हाईड्रोजन) वायु से सूक्ष्मतम रूप हेलियम की सत्ता सूर्य में यजु ९/३ अनुसार कही गयी है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में ओजोन के लिये उल्व शब्द संकेत है। पृथिवी से अंतराल के पांच स्तर अभी बताये जाते है। गगन, अंतरिक्ष, द्यौ, नभ और आकाश किन्तु यजुर्वेद में इस प्रकार १८ वें अध्याय के मंत्रो में सत्रह स्तर वर्णित है जो संशोधन का विषय है। वर्तमान में इकॉलॉजिकल होलोकास्ट (पृथ्वीपर्यावरण छिद्र) और न्यूक्लिअर डिझास्टर से (अण्वस्त्रादि से) दुनिया के लोक भयभीत हुए है। पृथिवी की पर्यावरण परतों में छिद्र पड़ रहे है और अण्वास्त्र से सर्वनाश होने वाला है। इनका विपरीत परिणाम संपूर्ण जीव सृष्टि पर हो रहा है कारण सूर्य की किरणें सरल सीधे पृथ्वी पर आ रही है। वृक्ष वनस्पति संरक्षण, वृक्ष न क़ाटने, सौर उर्जा का उपयोग, रेडिओ तरंगों से वायुमंडल शुद्धि, यज्ञ प्रचार, प्राकृतिक संतुलन बनाये रखना इत्यादि इस प्रकार उपाय दिये गये है।

वेदो के अंग ज्योतिष द्वारा सूर्य से पृथिवी का अंतर 9 करोड़ 30 लाख मैलो का बताया है जिसे आज वैज्ञानिको ने स्वीकार किया है। सूर्य पृथिवी से 13 लक्ष गुणा बड़ा है यह ज्ञान इसी वेदांग से प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं तो सौर कालगणना, ऋतु आदि का ज्ञान, चन्द्र कालगणना यह सब विज्ञान, ज्योतिष के हिमादि नामक ग्रंथ से एवं वेदों से ज्ञात होता है। काल नित्य है, उसकी गणना की है। अथर्व १९/४३ देखे, ब्रह्म दिव 1000 चतुर्युती का 5 अरब 32 करोड वर्ष का बताया गया है। वर्तमान सृष्टि का प्रारम्भ होकर 1 अरब 96 करोड 8 लक्ष 53 हजार 115 वर्ष हुए है, इसकी मान्यता अब वैज्ञानिको ने की है और वे कहते है कि इस सृष्टि रचना को लगभग 2 अरब वर्ष हुए है। इसका अर्थ यह है कि संसार के चरम विज्ञान उत्कर्ष का मूल केवल वेदों में है, अन्य तथाकथित ईश्वरीय पुस्तकों में बिल्कुल नहीं है। इतना ही नहीं तो वेदों में, आर्ष ग्रंथों में, वर्णित समस्त विद्यायें, कलायें वर्तमान विज्ञान पर शत प्रतिशत सत्य उतरी है। यह तो ईश्वरीय ज्ञान की कसौटी सिद्ध होती है।

सृष्टि के रचना का एक मंत्र है- तस्माद् वा एतस्मात् आत्मन आकाशः संभूतः, आकाशात् वायुः वायोः अग्निः, अग्नेः आपः, अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्यो अन्नम्, अन्नात् रेतः। स वा एष पुरूषो अन्नरसमयः (तैत्ति ब्रह्मानंद वल्ली अनु१) इसमें विज्ञान भरा पड़ा है। प्रथम आकाश, आकाश पश्चात वायु, वायु अंतर अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथिवी से ओषधि, ओषधि से अन्न, अन्न से रजवीर्यादि, वीर्य से पुरूष-वह यह पुरुष अन्नरसमय निर्माण हुआ है। इसमें दिया हुआ क्रम संपूर्ण वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक लोग आजपर्यंत मानते थे कि शब्द को एक स्थान से दूसरे स्थान पर्यंत ले जाने वाला वाहक वायु है, परन्तु उनकी यह मान्यता गलत है, अब मात्र वे मानने लगे है कि शब्द का वाहक या स्थान आकाश है। यह बात दर्शन ग्रंथो द्वारा बहुत पहले सिद्ध हो चुकी है। शब्द आकाश का गुण है। विज्ञान Try and error method गलती दुरुस्त करते हुए सीख रहा है, परन्तु ईश्वरीय ज्ञान में तो यह कदापि संभव नहीं, वह निर्भ्रान्त, सत्य, और ऋत ज्ञान है। गलत कदापित नहीं।

इसी संबंध में बताया जाता है कि विज्ञान गलतियां कर प्रगति करके कहता है कि संसार में दो ही मूलद्रव्य है, (elements) O_2+H_2 परंतु यह उनकी प्रारंभिक मान्यता असत्य सिद्ध हुई, तब वे कहते है- मूलद्रव्य दो नहीं 65 है, परंतु यह भी गलत सिद्ध हुआ और आविष्कार और संशोधन से प्रगति कर वैज्ञानिक कहते है कि 65 मूलद्रव्य नहीं, अब 95 है, परंतु फिर भी यह मान्यता अपूर्ण सिद्ध कर, कह रहे है कि 95 नहीं, मूलद्रव्य 105 से भी अधिक है। विज्ञान गलतीयाँ सुधार रहा है परन्तु अब कहता है कि 105 भी मूलद्रव्य नहीं है- वे केवल तीन ही है, जिसे इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रान और न्यूट्रान कहते है। यही तो तीन प्रकृति के गुण है जिसे दर्शन ग्रंथो में सत्व, रज, तम कहा है। विज्ञान आगे प्रगति कर कहता है कि इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रोन और न्यूट्रान के आगे क्वार्क्स है, और भी आगे बढ़कर वह कहता है कि क्वार्क्स के आगे उर्जा है अब मात्र वे आगे बढ़ने से रूककर पूर्णता से कहते है, संसार में केवल उर्जा काम कर रही है। ऐ वैज्ञानिको! आपने क्या यह नयी बात बतायी, अरे, यह तो वेद में जगह-जगह उपस्थित है- ओ३म् इषे त्वा, ऊर्जे त्वा। ओ३म् ऊर्जे द्वी पदी भव इत्यादि। वेद तो मूलतः ही यह कर रहा है, परन्तु मानवो का ध्यान वेदो की ओर नहीं, बस! यही विडम्बना है। ध्यान रहें, समस्त ज्ञान विज्ञान प्रज्ञान का भंडार, बीज रूप में, वेदों में है। अस्तु।

वेद ईश्वरीय ज्ञान होने में एक प्रमाण है कि -सृष्टिक्रम अविरोधात्। वेद का एक भी मंत्र-मंत्रवचन-सृष्टिक्रम के विरूद्ध नहीं है। वेद में जो भी कुछ है वह सब बुद्धिपरक है, इसलिये कहा है कि - बुद्धिपूर्वावाक्य कृतिर्वेदे। ध्यान रहे वेद और सृष्टि रचना जब एक ही परमपिता परमात्मा की सत्ता के कार्य है, तो इन दोनों में समन्वय एवं अभिन्नता होनी स्वाभाविक भी है और अनिवार्य भी है। इसीलिये किम डब्ल्यू पी ब्राउन अपने सुपीरीयारिटी ऑफ वैदिक रिलीजन पुस्तक में लिखते हैं- Vedic Religion is thoroughly scientific where science and Religion meet hand is hand, Here theology is based on science and Philosophy. इसी प्रकार वेदों की महत्ता में The

दुःखों के याद आने से वर्तमान सुख का माधुर्य बढ़ता है।

Bible in India Vol II Ch I में मि. एल. जॅकॉलिएट अन्यान्य मतमतांतरों की सृष्टि उत्पत्ति विषयक मन्तव्यों की समीक्षा करते हुए लिखते है- Astonishing Fact! Veda is of all revelations, the only ones whose ideas are in perfect harmony with modern Science.

कुछ प्रश्न ऐसे है जिनका समाधान सिवा वेदादि और कही नहीं हो सकता। क्यों जी 2+2=4 होते है पर क्यों? अमेरिका तथा जापान जैसे प्रगतिशील राष्ट्रों में दो और दो सव्वा चार, साडे चार क्यों नहीं होते? और अफ्रीका जैसे घनघोर जंगली क्षेत्र में दो और दो पौनेचार, साडेतीन नहीं क्यों होगा वह केवल वेद है।

2. संसार में दो प्रकार की संख्यायें/अंक है जैसे एक, तीन, पाच, सात, नौ, ग्यारह ऐसी विषय संख्यायें और दो, चार, छह, दस, बारह जैसी सम संख्यायें है। यह ज्ञान संसार को सर्व प्रथम वेदों नें ही दिया है। देखें यजु अ १८ मंत्र 24 और 25 ओ३म् आकाशश्च में तिस्वश्चमे, पंच च में पंच च में सप्त च में, सप्त च में नव च में इत्यादि और ओ३म चतस्त्रश्चमे, द्वादशच में, द्वादश चमे षोडश चमे, षोडश चमें विंशतिश्चमे इत्यादि।

3. समस्त देशों में अंक १ से ९ इतने ही है, नौ अंक पूर्ण होने से अब अंको की आवश्यकता रही नहीं बाद नौ के बाद शून्य। जीरो लिख दिया जाता है। यह मूलभूत ज्ञान संसार को वेदो से प्राप्त हुआ है। विज्ञान के पास क्या जवाब है? उत्तरः कुछ नहीं।

4. पाश्चात्य राष्ट्र जैसे ग्रेट ब्रिटेन (इंग्लैंड) में एक इस अंक पर दस शून्य चढ़ाने से टेन ट्रीलीयन्स नामक संख्या तैयार होती है। इंग्लैंड का अर्थ संकल्प इस टेन ट्रिलीयन्स से बाहर जाता ही नहीं, कारण उनका संख्या लेखन तथा संख्या वाचन का ज्ञान एक पर दस शून्य तक ही सीमित है, परन्तु अपने यहां एक इस अंक पर सतरह शून्य रखने पर जो संख्या बनती है उसे परार्ध कहते है, तब कहना ही पड़ेगा कि हमारा संख्या लेखन वाचन ज्ञान पाश्चात्यों से बहुत ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है।

5. आदित्य वार से शनिचर पर्यंत सात वार/दिवस होते है। आदित्यवार के बार सोमवार, सोम के बाद मंगल इत्यादि क्रम से आते है। अंग्रेजी में संडे के बाद मंडे, मंडे बाद ट्युसडे,ट्युसडे के बाद वेडनेस डे यह क्रम है। अब प्रश्न है कि संसारभर में वार सात ही क्यों है और उनका अनुक्रम उपर लिखे अनुसार क्यों है? ऐसा क्यों नहीं होता कि आदित्यवार के बाद बृहस्पतिवार और उसके बाद मंगलवार और उसके बाद शनिचर ऐसे क्यों नहीं आते? यह वार गणना और वाराधिपति की क्रमवार नामावली पाश्चात्य संस्कृति में विद्यमान नहीं है, वह केवल वेदों का अंग कहलाने वाले ज्योतिषशास्त्र की देन है। तब सोचिये संसार भर में आपकी संस्कृति ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है इसमें कतई संदेह नहीं। (शेष अगले अंक में) संकलन- अमर मुनि

आवारे श्वान सरीखा मानव-मन है,
उद्देश्य-हीन सा जिसका विफल - भ्रमण है,
जिसको विवेक का मंत्र नहीं मिल पाया,
उसको तो केवल दिशा-हीन भटकन है।

नहाने से बीमार हो गए भगवान जगन्नाथ, रोज दी जा रही हैं दवाइयां

रामपुरा स्थित भगवान जगदीश इन दिनों शयनकाल में है। इस दौरान भगवान का प्रतिदिन हेल्थ चैक-अप भी होता है। एक वैद्य उनके स्वास्थ्य की रोज जाँच करके दवाइयां भी दे रहे हैं। माना जाता है कि नहाने की वजह से भगवान बीमार हो गए हैं। पुरी के भगवान जगन्नाथ की तरह हूबहू यहां एक अरसे से इस परम्परा का निर्वहन किया जाता है।

मंदिर में प्राचीन मान्यता के अनुसार भगवान जगन्नाथ 15 दिन के लिए शयन में हैं। इनकी सेवा-सुश्रुषा हो रही है। रोजाना हेल्थ चैक-अप कर वैद्य के माध्यम से औषधियां दी जा रही हैं। जो आषाढ़ अमावस्या यानी 27 जून तक जारी रहेगी। शयन के दौरान यहां घंटे नहीं बजाते। स्वास्थ्य की दृष्टि से नियमित भोग की जगह किशमिश, काजू, दूध मेवे का भोग लगाया जा रहा है। 15 दिन बाद स्वस्थ होने पर मंदिर में आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा के दिन भगवान के सोलह कलाओं से परिपूर्ण विशेष दर्शन 15 मिनट के लिए होंगे। भगवान को आम पाक का भोग लगाकर भक्तों को इसे प्रसाद के रूप में बांटा जाएगा। 28 जून सुबह 10 बजे पंचामृत स्नान, 29 जून शाम 7 बजे भगवान की रथ यात्रा मंदिर परिसर में निकाली जाएगी। ऐसा पुजारियों का कहना है कि-

ऋग्वेद के अनुसार हो रहा है परम्पराओं का पालन-कंदाड़ पीठाधीश एस.के. चिरंजवी स्वामी ने बताया कि यहां भगवान जगन्नाथ, भ्राता बलभद्र और सुभद्रा की नीम के तने से बनी मूर्तियां जगन्नाथपुरी से लाई गई थी। जो वहां की तरह ही हैं। उन्होंने बताया कि जब पुरी में भगवान के दर्शनार्थ लोग जा नहीं पाते थे, तब यहां दर्शनों की व्यवस्था थी। उन्होंने बताया कि वो पांचवी पीढ़ी में हैं जो ऐसी धार्मिक परम्पराओं का निर्वहन ऋग्वेद के अनुसार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आषाढ़ मास और पूर्णिमा का महत्व आध्यात्मिक, ज्योतिष और वैज्ञानिक परम्पराओं के अनुसार है। सूर्य प्रत्यक्ष में जगन्नाथ भगवान का प्रतीक हैं। इसी के फलस्वरूप भगवान सूर्य को जल देने का अब समय आ गया है। मंदिर के गुम्बद में नील चक्र इसका प्रतीक है।

वेदों के नाम पर हो रहा है अंधविश्वास और पाखण्ड।
कहाँ जा रहा है मानव? "श्रद्धा के नाम पर आडम्बर"

शोक संदेश- आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री डॉ. सुधीर शर्मा की दादी जी पत्नी पं. नाथूराम शर्मा का देहावसान हो गया। वे लगभग 90 वर्ष की थी। उनका संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से कराया गया जिसमें महिलाएं भी सम्मिलित हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सभी सदस्यगण एवं अधिकारी इस दुःखद् वेला में माताजी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। -मंत्री अमर मुनि

एक अच्छी माँ सौ अध्यापकों के बराबर है।

भारत विभाजन के समय (15 अगस्त पर विशेष)
पश्चिमोत्तर राजस्थान का राजनैतिक सामाजिक परिदृश्य

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

गत् शताब्दी के चौथे दशक में मुस्लिम लीग ने लाहौर में जिस स्थान पर लाहौर में लीग का यह प्रस्ताव स्वीकार कर देश में भारी हलचल मचा दी थी। जिस स्थान पर लाहौर में लीग का यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ, वहां आज 'मीनारे पाकिस्तान' नाम का भव्य स्मारक (स्तम्भ) खड़ा है। बात यह थी कि दो तीन पीढ़ी पहले तक हिन्दू रहे गुजराती झीना भाई के एक वंशज बैरिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना (यह झीना परिष्कृत नाम था) ने कांग्रेस को त्यागकर 1906 में अंग्रेज वायसराय की शै पर 1906 में बनी मुस्लिम लीग का नेतृत्व स्वीकार कर लिया था और 1946 में उन्होंने पाकिस्तान बनाने के लिए अपने अनुयायियों को सीधी कार्यवाही का फरमान सुनाया था। नतीजतन कलकत्ता की सड़कों पर हजारों निर्दोष नागरिकों का खून बहाया गया। बंगाल के तत्कालीन प्रीमियर हसन शहीद सुहरावर्दी ने इस महानगर को शमशान में बदल दिया। उधर पंजाब से लीग से टक्कर लेने वाले यूनियनिष्ट पार्टी को बुरे दिन देखने पड़े। सर सिकन्दर हयात और उनके छोटे भाई खिजर हयात को राजनीति में बुरे दिन देखने पड़े। सिंध में राष्ट्रवादी मुसलमान अल्लाबख्श की सरकार के बाद लीग की सरकार बनी और जिन्ना के आदेश से सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला सिंध के मुख्यमंत्री बने। ये अंग्रेज परस्त लीगी थे।

सर हिदायतुल्ला की लीगी सरकार का प्रथम प्रहार आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर हुआ। इस्लाम की सतर्क समीक्षा करने वाले इस अध्याय को जब्त कर लिया गया तथा इसके मुद्रण व प्रकाशन को प्रतिबंधित कर दिया। आर्यसमाज के लिए अपने धर्मग्रंथ पर उठाया यह दमनात्मक कदम जब असह्य हो गया तो महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में 1946 में कराची में सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिए सत्याग्रह किया गया। किन्तु चतुर जिन्ना जानता था कि थोड़े दिन की बात है। 1947 के अगस्त तक तो सिंध पाकिस्तान का हिस्सा बन जायगा, तब तक आर्य समाजियों से दुश्मनी क्यों मोल ली जाये। उसके इशारे पर सर हिदायतुल्ला ने कोई दमनात्मक कदम नहीं उठाया। और आर्य नेता अपनी विजय का भ्रम पाल कर लौट गये। 1947 के बाद पाकिस्तान में सत्यार्थ प्रकाश के लिए कोई सम्मान जनक स्थान रहना ही कहाँ था?

1946-47 का राजस्थान (तब का राजपुताना) बाईस देसी रियासतों की इकाई थी। ये देशी रजवाड़े (अधिकांश राजपूत राजाओं से शासित, टोंक नवाब के अधीन) भारत के शासन की छत्रछाया में अंग्रेज नौकरशाहों (ये रजिडेंट कहलाते थे और उनका मुखिया एजेंट टु गवर्नर जनरल) के आज्ञानुवर्ती होकर अपना कथित स्वतंत्र शासन चलाते थे, किन्तु अंग्रेज रजिडेंट की आज्ञा के प्रतिकूल जाना कदापि सम्भव नहीं होता था। इन रियासतों में उच्च प्रशासनिक पदों पर वायसराय से अनुमोदित गोरे अफसर विराजमान रहते थे। जोधपुर का प्रधानमंत्री सर डोन्मल्ड फील्ड, वित्त मंत्री स्टील, शिक्षा निदेशक ए.पी. सक्स तथा जोधपुर रेलवे का मुख्य प्रबंधक जे. डब्ल्यू गार्डन, सभी गोरी चमड़ी वाले थे। जोधपुर की रेलवे का क्षेत्र मारवाड़ की सीमा को लांघकर सिंध के मीरपुर खास तथा हैदराबाद तक फैला था। इसलिए इस रेलवे के टी.टी. गार्ड तथा ड्राइवर कभी कभी सिंध के दौरे में कराची उस समय खूबसूरत शहर था। वहां के व्यापार व्यवसाय में बीकानेर के मोहता बंधुओं (शिवरतन मोहता आदि) का योगदान कम नहीं था। समुद्रतट स्थित उनकी विशाल कोठी को पाकिस्तानी पत्रकार वाहिदा हिना ने 'भास्कर' में प्रकाशित अपने संस्करणों में याद किया है।

अंग्रेज नौकरशाही की ऊपरी स्तर पर जकड़न होने पर भी कई रियासतों में प्रबुद्ध हिन्दुस्तानी अफसर भी शासन तंत्र को संभालते रहे। जयपुर में सर मिर्जा इस्माइल, बीकानेर में पहले सर प्रभाशंकर पटवी तथा बाद में सरदार के एम.पिनकर, उदयपुर में सर वी.टी. कृष्णामाचारी तथा भरतपुर में नारायण भास्कर खरे ऐसे नाम हैं जो राजनैतिक और प्रशासनिक सूझ-बूझ के साथ-साथ जनता की नब्ज पर अच्छी पकड़ रखते थे। देश की आजादी के घोषणा पत्र में जहां भारत को इण्डियन यूनियन तथा पाकिस्तान नामक दो इकाइयों में बांटने का प्रावधान था वहां देशी राज्यों के शासकों को यह छूट दी गई थी कि वे दोनों में किसी एक में शामिल हो सकते हैं। राजस्थान, गुजरात, मध्य भारत तथा पंजाब की सिख रियासतों ने जहां भारत में रहना स्वीकार किया वहां सत्ता और साम्प्रदायिकता के मद में चूर हैदराबाद के निज़ाम ने आजादी का जो बिगुल फूंका वह थोड़े समय बाद सरदार पटेल की नीतिकत्ता के कारण मौन हो गया। यह और भी हैरानी की बात थी कि सौराष्ट्र का एक पिद्दी सा राज्य जूनागढ़ भी आंखे दिखाने लगा, परन्तु जब सरकार द्वारा फौलादी शिकंजा कसने का अवसर आया तो उसने हवाई जहाज में बैठकर पाकिस्तान पलायन करने का ही फैसला किया। बेशक उसके पालतू कुत्तों और ब्याहता बेगमों की संख्या इतनी अधिक थी कि उसकी एक प्यारी बेगम तो महल में ही रह गई, बेशक प्यारा कुत्ता हवाई जहाज में स्थान पा सका।

पाकिस्तान के सिंध प्रांत से जोधपुर (मारवाड़) राज्य की सीमा लगती थी तो बहावलपुर (पाकिस्तान) की सीमा बीकानेर राज्य को स्पर्श करती थी। मारवाड़ के लोकप्रिय महाराजा उम्मेदसिंह का निधन दो मास पहले 9 जून 1947 को हुआ था। और युवा राजा हनवन्त सिंह ने इस राज्य का शासन संभाला था। रियासती विभाग सरदार पटेल के पास था जो उप प्रधानमंत्री के साथ-साथ भारत के गृहमंत्री भी थे यह मात्र अनुश्रुति नहीं सत्य घटना है कि जोधपुर का महाराजा भारत संघ में रहे या पाकिस्तान में जाये, इसे लेकर अनिश्चय की स्थिति में था। पता चला कि मि. जिन्ना ने उन्हें पाकिस्तान में अपनी रियासत का विलय कराने के लिए ब्लैंक चैक दे दिया था और वे इसी पशोपेश में था। यद्यपि पड़ौस के बीकानेर तथा जैसलमेर नरेशों ने उन्हें भारत में रहने का सत् परामर्श दिया तथापि युवा महाराजा डांवाडोल स्थिति में थे। इस तथ्य से अवगत

होने पर सरदार पटेल ने अपने विभागीय सचिव वी.पी. मेनन को आदेश दिया कि वे युवा महाराजा से मिलकर उन्हें भारत संघ में अपनी रियासत का विलय करने के औचित्य को समझायें। श्री मेनन जब महाराजा से मिलने दिल्ली के जोधपुर हाउस में गये तो स्वयं उनके अनुसार महाराजा तैश में आ गये और जेब से पिस्तौल निकाल लिया। मेनन ने उन्हें कहा कि पिस्तौल से उनका धमकाना व्यर्थ है क्योंकि वे सर्वसत्ता युक्त भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में उनसे मिल रहे है। महाराजा को बात समझ में आ गई और उन्होंने चुपचाप विलय पत्र पर दस्तखतकर दिये।

जोधपुर राज्य का भारत संघ में विलय तो हो गया किन्तु राजा के मन में सामन्तशाही और अधिनायकवाद के तत्व मौजूद रहे। उन्होंने प्रजा पक्ष की अवहेलना कर अपने नवीन मंत्रिमण्डल का गठन किया। अपने चाचा महाराजा अजीतसिंह को प्रधानमंत्री बनाया तथा सामन्ती तथा दरबारी मनोवृत्ति वालों को अन्य पद दिये। तब मारवाड़ लोक परिषद् तथा प्रजापक्ष के पत्र 'प्रजासेवक' (संपादक-अचलेश्वर प्रसाद शर्मा) ने इस मंत्रिमण्डल को दशहरे के दिन रावण के जन्म की संज्ञा दी। यह मंत्रिमण्डल दशहरे के दिन बना था।

बहुत पहले जब सिंध प्रदेश बृहत्तर बम्बई प्रांत (बॉम्बे प्रेसिडेंसी) का एक भाग था, इस प्रांत में धर्माधारित आबादी संतुलित स्थिति में थी। जब सिंध को पृथक प्रांत बनाया गया तो यह क्षेत्र मुस्लिम बहुल हो गया। तथापि राजस्थान को स्पर्श करने वाले सिंध क्षेत्र में सोढा राजपूत तथा अन्य अनुसूचित जातियां पर्याप्त संख्या में थी।

दोनों ओर के लोगों में परस्पर आना जाना, शादी ब्याह तथा सम्पर्क निर्बाध चलते रहे। सिंध का अमरकोट सोढा राजपूतों की जागीर थी। 1971 के युद्ध में जब भारत की सेना ने सिंध के इस क्षेत्र में दूर तक प्रवेश कर यहा का शासन सूत्र संभाला तो यहां के हिन्द मूल के निवासियों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। शीघ्र ही सिंध का यह क्षेत्र सिविल शासन के अंतर्गत आ गये। आई.ए.एस. अधिकारी कैलाशदान उज्ज्वल भारत शासित सिंध के प्रशासक बने तथा 15 अगस्त को उन्होंने पराजित पाकिस्तान की इस धरती पर तिरंगा फहराया। किन्तु विजय का यह उल्लास देर तक ना नहीं रहा। सैनिको ने जिसे युद्ध के मैदान में रक्त बहाकर प्राप्त किया उसे शिमला कान्फ्रेंस की मेज के सामने बैठकर प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने जेड.ए. मुद्दो को तश्तरी में लौटा दिया। यह कृत्य विजय को पराजय में बदलने वाला था।

जब साम्प्रदायिक आधार पर देश का बंटवार हुआ तो पंजाब तथा उत्तर पश्चिम सीमाप्रांत के हिन्दुओं को तो यह विश्वास हो गया था कि जल्दी ही उन्हें अपना यह आशियाना छोड़ना पड़ेगा किन्तु सिंध वासी हिन्दू-मुसलमानों के सम्बन्ध पर्याप्त मधुर थे, इसलिए यहां साम्प्रदायिक उपद्रवों की आशंका नहीं के बराबर थी। किन्तु 15 अगस्त को बीते अभी अधिक समय नहीं हुआ था कि सिंध के हालात भी बिगड़े और हिन्दू शरणार्थियों के समूह बाड़मेर की सीमा से भारत में आने लगे। मुख्यत: सिंध में आये ये शरणार्थि इन्हें पुरुषार्थी कहना उचित है, राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, गुजरात तथा मुम्बई में आकर बस गये। वस्तुत: अपने मूल स्थान से उजड़कर आये इन पुरुषार्थियों के साहस, स्वावलम्बन तथा पुरुषार्थ की सराहना करनी होगी। इन लोगों ने चाय की थड़ियां लगाकर तथा बिस्कुट व केले बेच कर निर्वाह किया, किन्तु भिक्षा नहीं मांगी।

धर्म, समाज, राजनीति तथा संस्कृति के क्षेत्र में सिंध का अवदान नगण्य नहीं है। इस धरती ने साधु टी. एल. बास्बानी (पूरा नाम थावरदास लीलाराम वास्वानी) को पैदा किया जो उच्च कोटि का शिक्षा शास्त्री (पटियाला के महेन्द्र कॉलेज का प्रिंसिपल) होने के साथ-साथ उच्च कोटि का साधक, भक्त तथा अध्यात्म तत्वविद् था। कांग्रेस द्वारा संचालित स्वतंत्रता संग्राम में सर्वरी जयरामदास, दौलतराम, आचार्य जे.बी. कृपालानी (पूरा नाम जीवत राम भगवानदास) तथा चोइथराम गिडवानी का योगदान कम नहीं था। देश विभाजन के पश्चात् भारत में आकर बसे सिंधी समुदाय का योगदान तो विवेचना का पृथक् विषय है। वाणिज्य-व्यवसाय, उद्योग-धंधों में ये अग्रणी रहे हैं।

पाकिस्तान की महिला पत्रकार कराची की जाहिदा हिना ने भास्कर दैनिक के रविवारीय नियमित स्तम्भ में सिंध की आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति में भारत से आकर सिंध में बसे भारतवासियों के योगदान की चर्चा की है। वहां की शिक्षण संस्थाओं में कराची के डी.जे. सिंध कॉलेज का महत्वपूर्ण स्थान था। कराची में आर्य समाज के प्रमुख केनद्र सुशीला भवन आ. रा.ब. शिवरतन मोहता के प्रसाद तुल्य भवन को आज भी वहां के लोग भूले नहीं हैं। भारत आकर बसे इन सिंधी पुरुषार्थियों में अजमेर के हकीम वीरूमल, जादूगर हासानन्द, शिक्षाविद् चंचलदास आर्य सेवक, लेखक और विद्वान प्रो. ताराचंद गाजरा तथा योग शिक्षक आचार्य भगवानदेव के नाम जाने माने हैं।

राजनैतिक उथल-पुथल तथा अस्थिरता के इस दौर में राजसथान का साम्प्रदायिक वातावरण अपेक्षाकृत शांत रहा। अलवर-भरतपुर का एक सीमित क्षेत्र अपवाद था। साम्प्रदायिक शांति का एक कारण यह भी था कि देशी रियासतों में शासन के उपर किसी प्रकार का भेद भाव नहीं बरता जाता था और राजकीय सेवा में सबसे उचित भाग मिलता था। कुछ लोग पाकिसतान अवश्य गये, कदाचित् उन्हें उन्नति के अधिक अवसर मिलने की सम्भावना वहां दिखाई दी। मैं अपने अनुभव बताऊं जो उस समय जसबंत कॉलेज जोधपुर में बी.ए. का विद्यार्थी था। हमारे कॉलेज में मुस्लिम विद्यार्थी यद्यपि अधिक नहीं थे तथापि मुस्लिम लीग से प्रभावित छात्रों ने मुस्लिम-स्टूडेन्ट्स यूनीयन का गठन किया था।

जब एक बार जिन्ना साहब वायु मार्ग से जोधपुर होते हुए कराची गये तो मेरे सहपाठी सैयद मोहम्मद अहमद ने हवाई अड्डे पर जाकर उनका स्वागत किया था। ध्यातव्य है कि महाराजा उम्मेदसिंह के शासन काल में जोधपुर हवाई मार्ग का प्रमुख केन्द्र था। 15 अगस्त के बाद हम विद्यार्थियों को आश्चर्य हुआ कि हमारे अर्थशास्त्र के प्राध्यापक श्री रिज़वी अचानक भारत से विदा लेकर पाकिस्तान चले गये हैं। नूर साहब तो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पढ़े थे। अत: उनका पाकिस्तान का हिमायती होना कोई अचरज की बात नहीं थी। धीरे-धीरे हमारे सहपाठी

मुस्लिम छात्र भी स्वदेश त्यागकर पाकिस्तान चले गये। मोहम्मद अली अन्सारी तथा सबूर अहमद उस्मानी के नाम याद आ रहे हैं। आज पैंसठ वर्ष बाद भी हालात में अधिक बदलाव नहीं आया है। बाड़मेर, मुनाबाव होकर खांखरा पार तक का रेलमार्ग खुल गया है किन्तु सीमांत क्षेत्र में जासूसी तथा तस्करी की गतिविधियां निरन्तर बढ़ रही हैं। तथापि सिंध में हिन्दू पर्याप्त संख्या में हैं। यद्यपि उनकी स्थिति जिमि दसनन बिच जीभ बिचारी सी है तथापि अपने साहस, एक्य भाव तथा स्वाभिमान के बल पर वे अपना सम्मान सुरक्षित किये है। तत्कालीन मुस्लिम लीग में राजस्थान का कोई जाना माना नेता नहीं था। एक नाम इब्राहिम इस्माइल चंदीगर का आता है जो मूलत: जोधपुर के रंगरेज (चुनरी रंगने वाले) थे किन्तु केरल में जा बसे थे। थोड़े दिन के लिए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री भी रहे थे। ज्ञात रहे कि आजादी के बाद भी करेल की मुस्लिम लीग जिन्ना की विभाजनकारी बातें दुहराती रही।

315, शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

आचार्य राम गोपाल शास्त्री
'महात्मा कालूराम सेवा सम्मान' से सम्मानित

रामगढ़शेखावाटी जिला सीकर (राज.) में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर 12 जुलाई 2014 को आर्य समाजी संत महात्मा कालूरामजी के शिखर बंध (आश्रम) में आर्य समाज का अर्द्धवार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर 'स्व. सोहनलाल जड़िया स्मृति ट्रस्ट, दिल्ली' द्वारा शेखावाटी के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य रामगोपाल शास्त्री (सैनी) प्राचार्य सेठ जी, आर. चमड़िया, पी.जी. संस्कृत महाविद्यालय, फतेहपुर को वैदिक धर्म के प्रचार में विशिष्ट कार्य के लिए 'स्व. सोहनलाल जड़िया स्मृति महात्मा कालूराम सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया। आचार्य जी को शाल एवं गायत्री मंत्र का दुपट्टा ओढ़ाकर, महात्मा कालूराम जी का चित्र, सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

जड़िया ट्रस्ट की ओर से रामगढ़ विकास ट्रस्ट के सचिव जगदीश प्रसाद जौहरी, वैदिक आश्रम, कोलायत बीकानेर के स्वामी आचार्य शिवकुमार शास्त्री, किशोरीलाल शर्मा, स्व. सोहनलाल जड़िया स्मृति ट्रस्ट के अध्यक्ष जुगल किशोर जड़िया, ओम प्रकाश जौहरी ने सम्मानित किया। सम्मानोपरांत आचार्य राम गोपाल शास्त्री का वेदों पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ जिसमें आपने वेदों की रचना कैसे हुई यह बताते हुए यह भी बताया कि वेदों में राजा, प्रजा, किसान, व्यापारी, शिक्षक, पिता, पुत्र, पति-पत्नी आदि के कर्तव्य बताये गये हैं। वेदों में आचरण की पवित्रता एवं सात्विक आचार-विचार पर जोर दिया गया है।

आर्य समाज मन्दिर, राजगढ़ (अलवर)

दिनांक 13 जुलाई 2014, रविवार को आर्य समाज मन्दिर राजगढ़ (अलवर) में श्री सतेन्द्र सैनी, प्रबंधक शान्ति निकेतन विद्यालय के निर्देशन में आर्य समाज मन्दिर राजगढ़ (अलवर) की नवीन कार्यकारिणी का निम्न प्रकार सर्वसम्मति से गठन किया गया-

श्री धर्म सिंह आर्य- प्रधान , श्रीमती मीतू सिंह आर्य- उप प्रधान
श्री गोपाल सिंह आत्रेय- मंत्री, श्री लक्ष्मी नारायण सैनी- उपमंत्री
श्री कुलदीप सिंह- कोषाध्यक्ष,
श्रीमती इन्द्रकांता सिंह- आय व्यय निरीक्षक
श्री नन्द सिंह आर्य- पुस्तकालय अध्यक्ष
अंतरंग सदस्य- श्री गैंदालाल सैनी, श्रीमती जगन देवी
श्री विनोदीलाल दीक्षित

- गैंदालाल सैनी, पूर्व मंत्री

विशाल वृष्टि यज्ञ का भव्य आयोजन

आर्य समाज शाहपुरा के तत्वावधान में दिनांक 13 जुलाई से 17 जुलाई 2014 तक पाँच दिवसीय वृष्टि यज्ञ विशिष्ट विद्वजन पं. वेदप्रिय जी शास्त्री सीताबाड़ी, बांदा (राज.), पं. शिवदत्तजी पाण्डे, सुलतानपुर (उ.प्र.), श्री रघुनाथ देव जी वैदिक ऐटा (उ.प्र.) व श्री डॉ. जितेन्द्र कुमार जी शास्त्री शाहपुरा (भील.) के नेतृत्व में सम्पन्न किया गया। पाँचो दिन विद्वानों के प्रवचन व भजनोपदेश होते रहे। पूर्णाहुति का कार्यक्रम समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मदनलाल जी आर्य (उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राज.), मुख्य अतिथि श्री कालूराम खौड़ (उपखण्ड अधिकारी शाहपुरा), विशिष्ट अतिथि श्री गणपत लाल आर्य (प्रधान जिला आर्य उप प्रतिनिध सभा भीलवाड़ा) व श्री विजय शर्मा (प्रधान आर्य समाज भीलवाड़ा) थे। पूर्णाहुति में राज परिवार से आये जयसिंह जी बाई सा महेन्द्र कुमार जी व मृदुला कुमारी जी भी पधारी।

आर्य समाज के प्रधान कन्हैयालाल आर्य ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मंत्री सत्य नारायण तोलम्बिया ने अतिथियों का स्वागत कर स्मृति चिह्न भेंट किये। वरिष्ठ उप प्रधान हीरालाल आर्य ने यज्ञ व कार्यक्रम का संचालन किया। दयानंद विद्यालय के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पुस्तके व बस्ते वितरित किये। यज्ञ में राजेन्द्रप्रसाद सिंह डोगी, मदनमोहन सुगंधी, चन्द्र प्रकाश झंवर, अन्नपूर्णा देवी भारद्वाज, जयन्त ओझा, मुरलीधर शर्मा, टीकमचंद चितलांगिया, कैलाश वर्मा, अनिल व्यास, हरिशा शर्मा, संतोक सिंह चौधरी, राधेश्याम जी नगर, बालमुकंद बगेरवाल, गोकल राजगुरु आदि अनेक सदस्यों एवं नागरिकों ने आहुतियां दी। प्रसादी का आयोजन भी रखा गया।

- सत्यनारायणन तोलम्बिया

ऋषियों ने वेद मंत्रों का प्रकाश क्यों किया?

'वेद प्रचार की परम्परा स्थिर रहने के लिए तथा जो लोग वेद शास्त्रादि पढ़ने को कम समर्थ हैं वे जिससे सुगमता से वेदार्थ जान लेवें, इसलिए निघण्टु और निरुक्त आदि ग्रंथ भी बना दिये हैं कि जिनके सहाय से सब मनुष्य वेद और वेदांगों को ज्ञानपूर्वक पढ़कर उनके सत्य अर्थों का प्रकाश करें।'

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

कठिनाइयों से जाना जाता है कि मनुष्य कितने पानी में है।

ओ३म्

स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य

संस्थापक अध्यक्ष, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर
के 94 वें जन्म दिवस के अवसर पर

आर्य समाज, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जन सहयोग से, विशेष सहयोग श्री अशोक सैनी (डायरेक्टर- त्रेहान होम डवलपर) व श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति के नेतृत्व में आयोजित

सात दिवसीय कार्यक्रम

6 से 11 अगस्त 2014 तक 31 अगस्त 2014 को निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर
स्थानः स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, अलवर

चिकित्सक

डॉ. देशबन्धु गुप्ता	डॉ. गोपाल गुप्ता	डॉ. डी.सी. शर्मा
मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.)	नेत्र रोग विशेषज्ञ	जिला मात् शिशु एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.)
M. 9414283270	(रविवार केवल 20 रोगी)	M. 9314401780

06 अगस्त 2014, बुधवार- तृतीय निबन्ध प्रतियोगिता
समय- प्रातः 10.30 बजे, स्थान - आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर

07 अगस्त 2014, गुरूवार- चतुर्थ रंगोली प्रतियोगिता
समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान - आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर

08 अगस्त 2014, शुकवार- 61वाँ निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर श्री हरीश अरोडा, श्री हेमराज कल्ला एवं श्री अखिल मेहता के विशेष सहयोग एवं जन सहयोग से।
समय- प्रातः 10.30 बजे से दोप. 1.00 बजे तक, स्थान- न्यायालय परिसर

09 अगस्त 2014, शनिवार- तृतीय पोस्टर प्रतियोगिता-
समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर

10 अगस्त 2014, रविवार- श्रावणी पर्व एवं रक्षा बंधन पर्व
समय- प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक , स्थान- आर्य समाज, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर

11 अगस्त 2014, सोमवार- आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित उ.मा.विद्यालयों में अध्ययनरत प्रतिभाशाली सर्वश्रेष्ठ छात्राओं को सप्तम पुरस्कार शारदादेवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट व स्व. पं. वाचस्पति शास्त्री मेमोरियल ट्रस्ट दिल्ली द्वारा
समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर

11 अगस्त 2014, सोमवार- यज्ञ एवं चतुर्थ सम्मान समारोह आर्य समाज का अलवर जिले में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए 'आर्य शिरोमणि' उपाधि श्री धर्मसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष- आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला अलवर को शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा
समय- सायं 4.00 बजे , स्थान- आर्य समाज, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर

31 अगस्त 2014, रविवार- 62वाँ निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर डॉ. सतीश माथुर थायराइड एवं मधुमेह विशेषज्ञ दिल्ली, श्रीमती प्रीति आर. चौधरी हैदराबाद, श्रीमती दीप्ती कपूर सिल्वासा, श्रीमती शुची भर्तृहरि देहरादून श्रीमती सुरभि चन्द्रा व जनसहयोग से
समय- प्रातः 9.30 बजे से दोप. 1.00 बजे तक, स्थान- आर्य समाज, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर

विशेष सहयोग- क्योरवेल डायग्नोस्टिक, अलवर द्वारा सभी जाँचें रियायती दरों पर होंगी।

नोट- थायराइड की जाँच दिनांक 25,26, 27,28 अगस्त 2014 सेम्पल कलेक्शन श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल में प्रातः 10 से 12 बजे एवं रजिस्ट्रेशन।

आपके द्वारा दिये गये दान से किसी की जान बच सकती है।

जन्म दिन, शादी, पुण्यतिथि, त्योहार, खुशी के मौके आदि पर दिल खोल कर समिति को दान करें।

आयकर की धारा 80 जी की छूट है। समिति का बैंक खाता नं. 06680100013946 बैंक ऑफ बडौदा मुख्य शाखा, अलवर में है।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर

निवेदकः श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर मो.: 9413304495

वाह्य स्पर्श से सत्य का दूषित होना ऐसा ही असम्भव है जैसा कि सूर्य की किरण का।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014 - 2016 / आर. एन. आई नं. 10471/60

आर्य समाज अरावली विहार, अलवर में विशाल वृष्टि यज्ञ 21 - 24 जुलाई तक सम्पन्न हुआ

पं. अमरमुनि- महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के नेतृत्व में अलवर की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआँ) अलवर में दिनांक 21 से 24 जुलाई 2014 तक प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक एवं सायं 5 बजे से 7 बजे तक विशाल वृष्टि यज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ के मुख्य ब्रह्मा श्री हरिपाल आचार्य जी- जिला मंत्री आर्य समाज थे एवं उनके सहयोगी पं. शिवकुमार कौशिक, रघुवीर आर्य तथा धर्मेन्द्र शास्त्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एडवोकेट श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता- प्रधान विद्यालय समिति एवं संयोजक श्री अशोक आर्य - उप प्रधान विद्यालय समिति, एवं सह संयोजक श्रीमती कमला शर्मा निदेशक एवं डॉ. राजेन्द्र कुमार वरिष्ठ सदस्य आर्य कन्या विद्यालय समिति थे। माता मोहनदेवी वानप्रस्थी एवं संरक्षिका आर्य समाज बाजाजा बाजार एवं श्रीमती शांतिदेवी तनेजा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

इस वृष्टि यज्ञ में गाय के 2 टिन घी तथा विशेष प्रकार की तैयार की गई 50 किलो सामग्री तथा कैर की समिधाओं से यजमानों एवं श्रद्धालुओं ने विशाल यज्ञ वेदी में श्रद्धापूर्वक आहुतियां दी एंव यज्ञ में अथर्ववेद तथा वर्षा के विशेष मंत्रों का पाठ किया।

वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति 24 जुलाई 2014 को प्रात: 9 बजे लगाई गई। इस अवसर पर महामंत्री पं. अमरमुनि ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञ सबसे श्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ में डाली गई आहुतियां सूक्ष्म रूप में आकाश में जाती रहती है। ईश्वर भी यज्ञमय है एवं मनुष्य को यज्ञमय बनना चाहिए।

दिनांक 21 से 24 जुलाई 2014 तक चले विशाल वृष्टि यज्ञ में सर्व श्री कृष्णलाल अदलखा एवं उनकी धर्मपत्नी, ईश्वर चक्रवृति व उनकी धर्मपत्नी, सुनील कुमार आर्य एवं धर्मपत्नी, शांति देवी तनेजा, ईश्वरी देवी शर्मा, रेखा मित्तल, रोशनलाल चक्रवृति, देवेन्द्र बत्रा, रमेश चुघ व धर्मपत्नी, सुरेश चंद गोपयल व धर्मपत्नी, रविन्द्र सचदेवा व धर्मपत्नी, रजनी मित्तल, सरोजबाला, मुन्नीदेवी, शिमला सोनी, ओमप्रकाश तनेजा, सीता देवी, सरला आर्य, विभा आर्य आदि प्रमुख रूप से यजमान बने।

कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया जिनमें सर्वश्री प्रदीप आर्य-प्रधान आर्य समाज, विनोद भंडारी, ब्रह्मदत्त आर्य, सत्यपाल आर्य, राजपाल यादव, गजेन्द्र वैस, डॉ. बी.डी. चौधरी मंत्री , बृजेन्द्र देव आर्य-आर्य समाज मंत्री, सुरेश दर्गन-संयुक्त मंत्री विद्यालय समिति, रामसहाय अरोड़ा, श्रीराम मल्होत्रा, मुकेश कोछड़ तथा सुरेन्द्र आर्य आदि मुख्य रूप से उपस्थित हुए। *-धर्मवीर आर्य,मंत्री*

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान कार्यकारिणी की बैठक की सूचना

आदरणीय,

सदस्य / अधिकारी (कार्यकारिणी)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

विषय- कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थिति हेतु सूचना।

महोदय,

24 अगस्त 2014, रविवार को प्रात:11 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की कार्यकारिणी की बैठक रखी गई है। आप सभी सदस्यों एवं अधिकारियों से निवेदन है कि वो समय पर पधार कर बैठक को सफल बनायें।

विचारणीय बिन्दु-

* वर्तमान कार्यकारिणी का समय विस्तार की पुष्टि।
* प्रतिनिधि सभा के भवन की मरम्मत कराने पर विचार।
* आय व्यय का विवरण
* प्रतिनिधि सभा को प्राप्त विभिन्न परिवेदनाओं का निस्तारण।
* अन्य आवश्यक सुझाव अध्यक्ष की अनुमति से।

स्थान- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजा पार्क,जयपुर

समय- प्रात: 11.00 बजे

विजय सिंह भाटी (प्रधान) डॉ. सुधीर शर्मा (कोषा. एवं कार्यालय मंत्री)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004
यूको बैंक A/c No. : 18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।